IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

गर्भाधान संस्कार के लिए उपयुक्त शुभ समय एवं शास्त्रोक्त विधि

आचार्य कमलेश कुमार मिश्रा
अतिथि विद्वान संस्कृत पाली एवं प्राकृत विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर म.प्र.

प्रस्तावना:

आधुनिक युग में उत्तम संतान प्राप्ति हेतु शास्त्रों की विधि अनुसार संस्कार गर्भाधान संस्कार करने पर उत्तम संतान की प्राप्ति की जा सकती है। गर्भाधान संस्कार सोडस संस्कारों में प्रथम संस्कार कहा गया है। गर्भाधान शब्द 2 शब्दों के योग से बना है। गर्भ+अधान अधान का सामान्य अर्थ स्थापित करना या रखना इस प्रकार गर्भाधान का शाब्दिक अर्थ है पुरूष के द्वारा स्त्री के गर्भाशय में बीज रूप शुक्र का स्थापित करना। स्त्री को क्षेत्र कहा गया है और पुरूष को बीज जैसे बीज बोने के लिए भूमि (क्षेत्र–खेत) की आवश्यकता होती है वैसे ही पुरूष रूपी बीज के स्त्री रूपी क्षेत्र में स्थापित होने की यथोचित क्रिया गर्भाधान है। किन्तु इस सृष्टि प्रक्रिया को धार्मिक तथा यज्ञ रूप में बनाना अर्थात् उसे संस्कृत करना संस्कार का कार्य है।

1. जैसे अंत:करण की शुद्धि के लिए भगवत भक्ति सम –दमादि अनेक साधन है वैसे ही शरीर तथा बाह्यकरणों की शुद्धि संस्कारों से होती है यद्यपि गर्भाधान संस्कार का कृत्य बाह्य है। किन्तु इसका पूर्ण प्रभाव संतान के मन, बुद्धि, चित्त तथा हृदय पर विलक्षण रूप से होता है।

2 गर्भाधान संस्कार के लिये माता पिता का सदाचार संपन्न होना ऋतुकाल (मासिक धर्म) उपस्थित होना ऋतुकाल में भी निशिद्ध (वर्जित) तिथियों, नक्षत्रों, पर्वो तथा योगों का परिहार करना सहवास से पूर्व देव पूजन तथा वैदिक मंत्रों का पाठ करना सुलक्षण तथा धार्मिक भावों से संपन्न संतति की कामना करना इस प्रकार के गर्भाधान द्वारा पुरूष का जो वीर्य दोष पाप है वह नष्ट हो जाता है और स्त्री के आर्तव एवं गर्भ संबंधी जो दोष होते है वे नष्ट हो जाते है तथा क्षेत्र (गर्भाशय) की शुद्धि हो जाती है। यज्ञवल्क्य स्मृति के आचाराध्याय 13 में कहा गया है 'एवमेन: शमंयाति बीजगर्भ समुदभवम्'।

3. गर्भाधान में वर्जित तिथि, नक्षत्र – नक्षत्र एवं तिथि तथा लग्न के गंडान्त निधनतारा, जन्मतारा, मूल, भरणी, अश्नि, रेवती, ग्रहण दिन, यतिपात, वैधृति योग, माता–पिता का श्राद्ध दिन, दिन का समय, परिघयोग के आदि का आधा भाग उत्पात से दूषित नक्षत्र, जन्म राशि या जन्म नक्षत्र से आठवां लग्न, पापयुक्त नक्षत्र या लग्न, पापयुक्त, नक्षत्र या लग्न, भद्रा, षष्ठी, चतुदर्शी, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रांति दोनों संध्याकाल का समय (सुबह–शाम) मंगलवार, रविवार, शनिवार, रजोदर्शन से आरंभ करके चार दिन यह वर्जित है।

4. गर्भाधान के लिए शुभ मुहुर्त–

दिन – सोमवार, वृहस्पतिवार, शुक्रवार, बुधवार

नक्षत्र– उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनि, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, और शत्तारक– ये गर्भाधान के लिए शुभ है।

तिथि–नंदा–जया, पूर्णा तिथियाँ

शुभ योग– सिद्धि, साध्य शुक्ल, शुभ आदि

5. पूजन विधि– सर्वांगपूर्ण विधि–

प्रतिज्ञा संकल्प, गणेश पूजन, षोडसमात्रिका, नान्दीश्राद्ध इत्यादि संपन्न कर। इसके बाद उसी दिन या सोलह दिन से पूर्व किसी शुभरात्रि के दूसरे पहर में दाहिने हाथ से अपनी स्त्री की नाभि स्पर्श करते हुए निम्न मंत्र पढ़े। 'ऊँ विष्णुर्योनि कल्पत....' इसके उपरांत पूर्व अथवा उत्तर को मुख किये हुए पति अपनी पत्नि को इस मंत्र से अभिमंत्रित करें। 'ऊँ गर्भ देहि सिनीवालि'.......

वीर्य दान मंत्र– 'ऊँ गायत्रेण त्वाछन्दसा'........ शु.यजु.1/27

ऊँ रेतो मूत्रं विजहाति ... (शु.य.19/76)

वर्तमान समय में गर्भाधान संस्कार की पूरी विधि संपन्न करने में जिन्हें कठिनाई प्रतीत हो तो उनके लिए संक्षिप्त एवं सरल विधि से सांकल्पिक विधि द्वारा भी पूजन संपन्न किया जा सकता है। ऐसा शास्त्रमत है। अपने कुल पुरोहित के द्वारा यह सांकल्पिक विधि संपन्न कराई जा सकती है।

6. वैज्ञानित तथ्य– मानसिक और भावनात्मक अनुकूलतः आधुनिक विज्ञान भी मानता है। कि गर्भधारण के समय माता–पिता का मानसिक तनाव मुक्त होना जरूरी है। गर्भाधान संस्कार के दौरान सकारात्मक माहौल, मंत्रोचार और प्रार्थना से शरीर में एंडोर्फिन (Indor phins) और आक्सीटोसिन (Oxytocin) जैसी सकारात्मक हार्मोन उत्पन्न होते है। जो भ्रूण के विकास में मद्द करते है।

निष्कर्षः–

शुभ तिथि मुहुर्त तथा शास्त्रों के विधि द्वारा उत्तम संतान की प्राप्ति की जा सकती है।

संदर्भित ग्रंथः–

1. तैत्तरीय संहिता 6/3/10/5
2. याज्ञवल्यक्स्कृति 1/13
3. शुल्क यजुर्वेद म.शा. 1/27
4. शुल्क यजुर्वेद म.शा. 19/76
5. वृहद आरण्यक् उ.नि. 6/4/21
6. वृहद आरण्यक् उ.नि. 6/4/23
7. सुश्रुत सं. शा. 2/46
8. सुश्रुत सं. शा. 3/35
9. सुश्रुत सं. शा. 3/16
10. नारद पु. 2/27/29–30

IJCRT